रविवार, दिनाँक **31-03-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया, वारी प्यारिया बलिहारी प्यारिया,

महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

जन्म जन्मांतराँ दी गहरी निद्रा विचों, हुण आन जगाया बलधारी प्यारिया

महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

राह अवलड़ा ते औखा हाई पैंडा, हुण सौखा दिखाया बलधारी प्यारिया।

संसार समुंद्र विच किश्ती डोले, हुण किनारे लगाई गदाधारी प्यारिया।

दासियां गिरदियां नूं तुसां गिरन न देवना, हुण ताकत बख्शनी बलधारी प्यारिया।

महाबीर जी दी सूरत लखी न जाये, कई चन्द्रमा दे चन्द्र उत्तों वारी प्यारिया।

कई सूरजां दे सूरज उत्तों वारी प्यारिया, महाबीर जी दे चरणां तों वारी प्यारिया।

मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे, ओ सिंघासन ते साजन धनुषधारी प्यारिया।

पीले वस्त्र गल वैजन्ती माला, सेवक लक्ष्मण ब्रह्मचारी प्यारिया।

ऋषि मुनि अन्त पा न सकन, ताकत है रघुनाथ जी दी सारी प्यारिया।

हुण भैणों तुसी होश सम्भालो, दासी हथ जोड़ अर्ज गुज़ारी प्यारिया।

सजनों आप ने अभी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से भजन सुना। इस भजन के अंतर्गत सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में स्थित रहने हेतु सब कुछ कुर्बान करने को तत्पर हैं। इस सन्दर्भ में जानो कि जब कोई सुरत इस भाव से अपना सम्बन्ध उनके साथ स्थापित करती है तो वह उन्हें अच्छी लगती है। अच्छी लगती है तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास जो भी ज्ञान है, शक्ति है, श्रेष्ठता है, वह सहर्ष उसे प्रदान कर देते हैं। आपको भी सजनों यही सुनिश्चित करना है क्योंकि हम देख

रहे हैं कि काफी सजन बार-बार कहने के बावजूद भी अपने जीवन के प्रति सतर्क नहीं हो पा रहे हैं। इसका हल एक ही है कि सत्संग में जो भी सुनते समझते हो उसे दिनचर्या के दौरान वर्ताव में लाया करो। पर इससे पहले एक नियम बनाओ कि सत्संग शुरु होने से पाँच मिनट पूर्व ही सत्संग हॉल पहुँच जाया करो ताकि जब सवारी उठाई जाए तो सब उसकी चरण धूल ले सको। वैसे भी सजनों जब सवारी उठाई जाए तो हमारे लिए बनता है कि हम शास्त्र को पूरी इज़्जत देते हुए उसके सार्वजनिक रूप से उठाए जाने से पूर्व ही अपने श्रद्धापूर्वक अर्पित करें। आप ही बताओ कि सवारी उठाने के पश्चात सत्संग आना क्या आपको शोभा देता है?

नहीं जी।

निःसंदेह वह अनुचित है। हम देखते हैं कि बाहर वाले सजनों के अतिरिक्त वसुन्धरा वाले सजन भी ऐसी ही अनुचित हरकतें कर रहे हैं। जहाँ तक हम अनुभव करते हैं कि इनमें से अधिकतर सजन केवल सुविधायें लेना चाहते हैं परन्तु वसुन्धरा की उन्नति के प्रति कर्मठ होकर निष्काम भाव से जो कार्य करना होता है, उसके प्रति वह अचेत हैं। इस परिप्रेक्ष्य में हमने आज इस बात का जायजा ले लिया है कि आज सत्संग में युवा-अवस्था से लेकर वृद्धावस्था के कौन-कौन से सजन उपस्थित हैं। जो यहाँ वसुन्धरा में रहकर भी अपना जीवन बनाने के प्रति कमज़ोर या लापरवाह हैं, हम बाद में उनके विषय में विचार करेंगे और यदि हमें लगा कि उनको दुनियाँ, दुनियांवी बातें व दुनियावी खेल प्यारे हैं तो ऐसे सजनों को कह दिया जाएगा कि वे दुनियाँ में ही चले जायें ताकि जो नए सजन निष्काम भाव से सेवा कर सकते हैं, उनको यहाँ आने का मौका मिले। इस संदर्भ में सजनों इतने वर्षों में, सारी बात सुनने के पश्चात, इनको यहाँ के नीति-नियम समझ आ जाने चाहिये थे और समय पर सत्संग पहुँचना सुनिश्चित करना चाहिए था। इसी के साथ सत्संग की जो भी गतिविधियाँ चलती हैं, उनमें भी इन्हें पूरा हिस्सा लेना चाहिए था। परन्तु जब हमने वस्तुतः स्थिति की जाँच क्रिया करवाई तो परिणाम उत्तम नहीं मिला। अतः आज जो भी सत्संग में लेट आया और जो आया ही नहीं यानि अपने ही घर में मस्त है, उनको अब सावधान हो जाना है क्योंकि यहाँ वसुन्धरा में केवल वही रह सकता है जिसके अन्दर भरपूर निष्काम सेवा का मादा हो। सजनों इस सन्दर्भ में हमें झूठ कदापि मन्जूर नहीं है। अतैव ऐसा जो भी कर रहे है, वे सतर्क हो जाएं अन्यथा परिणाम अच्छा नहीं होगा। जानो यह सरासर झूठा व्यवहार है और ऐसा व्यवहार करना गुनाह है। अन्य शब्दों में अगर आप इतने सालों से वसुन्धरा में रहते हुए या सत्संग में आते हुए भी झूठ का सहारा लेते हो तो

यह अनुचित बात है। यह सन्देश एक-एक को दे देना है कि अगर यहाँ रहना है तो यहाँ के नीति-नियमों की कड़ाई से पालना करनी होगी अन्यथा अपना इन्तजाम कर लेवें। हमे अच्छा नही लगा। हम तो किसी को बर्बाद होते हुए नहीं देख सकते लेकिन यह तो बर्बादी की राह पर ड़टे पड़े हैं। इनकी अक्ल टिकाणे आ ही नहीं रही। सजनों अगर ऐसे सजन पूरी तरह से आगे नहीं रहेंगे तो इनका कौन और कैसे सम्मान करेगा? कौन होगा जो इन द्वारा स्थापित किये हुए अनीतिपूर्ण आदर्शों का अनुकरण करेगा? अब परमात्मा कहते हैं, 'छल कपट मुझे न भावे'। सजनों यह बात हर सजन तक पहुँचा देनी है। ऐसे ही यह नीति फरीदाबाद या आसपास वाले जो सजन आते है, उन पर भी लागू होती है। हम तो हैरान हैं कि शनिवार को अपने दु;ख़ों का निवारण कराने या कोई सुखद कार्य हो तब तो आ जाते हैं, पर रविवार सत्संग सुनने नहीं आते। तो इसका मतलब तो यह मतलबी यार ही हुए न? इनका भी अब हम प्रबन्ध करने वाले हैं। पहले यहीं वसुन्धरा से ही शुरु करेंगे क्योंकि इनको बहुत अधिक चेतावनियाँ दे चुके हैं। अब कीर्तन सुनोः

(सच्चे पातशाह जी कह रहे हैं)

सब तों है महाबीर जी प्यारा ओ प्यारा, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।

कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां, हुण कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

कर्ता वी आप हो अकर्ता वी आप हो, कर्ता वी आप हो अकर्ता वी आप हो।

इन्हां रीतियां मिलाया महाबीर प्यारा ओ प्यारा, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

सिंहासन है हुन आपदा, दूसरा कोई नहीं जापदा।

इन्हां रीतियां दिखाया तुहाडा द्वारा ओ द्वारा, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

बिन सूरजों प्रकाश जग अन्दर, तेरा निवास हर वस्तु अन्दर।

प्रकाश ही प्रकाश नज़र आया ओ आया, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

अन्दर प्रकाशी बाहिर प्रकाशी, बाहिर प्रकाशी मन मन्दिर प्रकाशी।

सब विच आप समाया ओ समाया, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

हनुमान जी दे चरणां ते ढावां, पूरण महाबीर जी दे चरणां ते ढावां।

सहंसर बार खुशियां मनावां लख लख वारी खुशियां मनावां।

जैं अटल राज दिखाया दिखाया, कैसे छड्डां रघुनाथ जी रीतियां।।

सजनों इस कीर्तन के तहत् सच्चेपातशाह जी परमात्मा से जो वार्तालाप कर रहे हैं उससे उनका प्यार स्पष्टतया जाहिर होता है। इस संदर्भ में वह कहते हैं कि मुझे तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सबसे प्यारे हैं क्योंकि उनकी रीतियों व नीतियों पर चलकर ही हमने सब कुछ प्राप्त किया है। फिर वह कहते हैं कि यह रीति-नीति हमारे स्वभाव का अंग बन गई है। सजनों इतने सालों से सत्संग में आने के पश्चात हम सब का भी यही आदर्श होना चाहिये। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे लिये बनता है कि हम उनकी प्रत्येक रीति-नीति का सहर्ष पालन करें ताकि हमारा हृदय, जिसमें आज असत्य-अधर्म का अन्धकार छाया हुआ है, वह पुनः सत्य से प्रकाशित हो उठे। इस सन्दर्भ में सजनों जब हृदय सत्य से प्रकाशित हो गया तो वही प्रकाश बाहर दृष्टिगोचर होगा और सर्व एकात्मा का भाव पनपेगा। तब अपनापन यानि सजनभाव व्यवहार में उतरेगा और हमारा जीवन खुशियों से भर जाएगा व सार्थकता की ओर अग्रसर होते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। इसके लिये नीतियों की पालना करना तो अनिवार्य है। यहाँ हमने पहले वसुन्धरा और फरीदाबाद वालों का ही नाम लिया है क्योंकि कई सजन रीति-नीतियों पर सुदृढ़ता से बने रहने में अत्यन्त कमज़ोर हैं। ऐसे सजनों का असत्य-अधर्म के रास्ते से इतना अधिक प्यार हो गया है कि असत्य-अधर्म द्वारा अपनी कामनाओं को पूरा करना उनका स्वभाव बन गया है। सजनों जानो कि जब इन्सान कामनायुक्त होकर विचरता है तो उस सजन का कोई साथी नहीं होता। उस सजन को उसकी अपनी हालत पर छोड़ देना ही श्रेयस्कर होता है। अब यही होने वाला है ताकि अन्य सजनों को भी सीख मिले। हो सकता है कि इस डर से उनकी अक्ल टिकाणे आ जाये और वह अपना जीवन आबाद करने मे समर्थ हो जायें। सजनों यह भी कलियुगी इन्सानों को सचेती में लाकर सत्य का प्रतीक बनाने का एक प्रयास होता है। इतनी अधिक बार सुनने के पश्चात भी जो सजन नहीं मानता तो उसके लिये एक समय तो ऐसा आता ही है। यह युगों में हुआ, यही नीति युगपुरुषों ने भी कर दिखायी।

सब सजन अब समझदारी में आ जाना क्योंकि चैत्र के यज्ञ का लगभग पन्द्रह दिनों बाद शुभारम्भ होने वाला है। अतः सभी अपने-अपने परिवारों सहित यज्ञ-उत्सव में शामिल होने की तैयारी कर लो। ए विध् समझदारी दिखाकर अपने व अपने परिवारजनों के सजन बन जाओ और सजनता का सन्देश कुल दुनियाँ तक पहुँचा दो। यह आपका अपने व सबके प्रति कर्त्तव्य बनता है। इस सन्दर्भ में जानो कि जो किसी भी वजह से अपने कर्त्तव्य से हारता है, वह इन्सान निन्दा का पात्र होता है। अब यह खुद पर निर्भर करता है कि आप निन्दा के पात्र बनना चाहते हो या सजनता का प्रतीक बनना चाहते हो? फैसला आपने स्वयं करना है। सजनों यह समय का आवाहन है अतः आध्यात्मिक क्रान्ति को समझते हुए और इसका पूरा लाभ उठाने हेतु आत्मज्ञान तो प्राप्त करना ही पड़ेगा। सजनों जब तक सामूहिक रूप में पूरा परिवार आत्मिकज्ञान प्राप्त करने में नहीं जुटेगा, या इस कार्य सिद्धि हेतु जाग्रत नही होगा, तो ऐसे परिवारोंउ को जीवन में अधिक से अधिक कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ेगा। अतः श्रेष्ठता के प्रतीक बनने के लिये हमें मतलबी नहीं बनना अपितु सर्व-हितकारी बनना है। इस हेतु आपके पास बुद्धिबल तो है ही, पर इस बुद्धि को निर्मल बनाना है। ज्ञात हो कि बुद्धिबल सबसे बड़ा बल होता है। जिस सजन का बुद्धिबल क्षीण हो जाता है, वह जीवन के किसी भी पहलू में पूर्ण रूपेण सफल नहीं हो सकता क्योंकि ऐसे बुद्धिहीन इन्सान को तो कोई भी कुरस्ते पर चढ़ा सकता है, इस बात को समझ लेना। हम बार-बार कह रहे हैं कि आप सबने यज्ञ पर आना है। इसी में आपकी भलाई है। जो अपना भला नहीं चाहते वह चाहें तो अपने घरों में बैठे रहना। अब आगे कीर्तन सुनोः-

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सजनों को समझा रहे हैं

(महाबीर जी के मुख के शब्द)

चौपाईः-

देखो बैठे हिन कृपा निधान जी। ओन्हां दा नाम है कुल जहान जी।।

जगत सारे विच ओन्हां दा स्थान जी। ओ३म् जगत सारे विच ओन्हां दा स्थान जी।।

जन्म अपना सफल बनावना। कल गुज़रिया अज नहीं आवना।।

कठ्ठा करलै तूं अपना सामान जी। ओ३म् कठ्ठा करलै तूं अपना सामान जी।।

स्वास स्वास ए नाम ध्यावना। स्वास निकलया फेर नहीं आवना।।

धुन्नि रटलै तूं सिया राम नाम दी। ओ३म् धुन्नि रटलै तूं सिया राम नाम दी।।

वेला छुटकिया हथ नहीं आवना। कूड़ छड के ते सच नूं कमावना।।

पल्ले बन लै सच्चाई वाला दाम जी। ओ३म् पल्ले बन लै सच्चाई वाला दाम जी।।

जे तैं जन्म मरण नूं मिटावना। पास छड के ते फस्ट नूं कमावना।।

साडा आलीशान मकान जी, साडा ऊपर है ओ मकान जी।।

ओ३म् साडा आलीशान मकान जी। देखो बैठे हिन किरपा निधान जी।।

रोशनी आप दी तूं उस रोशनी दा चानणा। हर वस्तु विच आप नूं ही जानना।।

फिर त्रिलोकी दा सिंहासन अपना जान जी।

ओ३म् फिर त्रिलोकी दा सिंहासन अपना जान जी।।

अब क्या कहें आपको? आप समझने में तो आ ही नहीं रहे, तो हमें अच्छा नहीं लग रहा। अब स्कूल की व्यवस्था और सुधारने के लिये हमने स्कूल वालों को कोई मिल्ट्री का रिटायर्ड ड्डड्डश्र्त्दत्म्नद्यद्धड्डद्यदृद्ध नियुक्त करने के लिये कह दिया है, जो बसों वगैराह का भी पूरा काम देखेगा। इसी तरह जो आज टीचर यहाँ लगे हुए हैं, उनमे से जिनका रिजल्ट आशानुकूल आ रहा है, वह तो ठीक हैं पर जो कमज़ोर हैं उनके स्थान पर नये टीचर नियुक्त करने के लिये कह दिया है। सजनों इस सन्दर्भ में यदि आपके परिवारों में, सम्बन्धियों में या जान पहचान वालों में कोई भी टीचर प्राईमरी क्लासों के लिये या फिर ऊपर की क्लासों के लिये हो, उसका बायोडाटा दे सकते हो। जो भी आपके सम्पर्क में हैं उनको भी इस बारे में कहना है ताकि स्कूल जो थोड़ा कमज़ोरी से उबर रहा है, उसको पूरा उठाने का प्रयास हम सब मिलकर ही कर सकते हैं। इसी प्रकार ऐडमिशन का भी है क्योंकि अब व्यवस्था बहुत अच्छी बनाने जा रहे हैं अतः ऐडमिशन में भी आपने इसे अपना काम समझकर योगदान देना है। हमें तब नतीजा समझ आ जायेगा कि आप कितने

मननकार हो या कितने बात को अनसुनी कर देने वालो में से हो। इस परिप्रेक्ष्य में जो भी कार्य आप सजनों को दिया जाता है, उस कार्य की सिद्धि के प्रति पूरा प्रयास करना होता है, नहीं तो आप इस परिवार के सदस्य कदापि नहीं कहला सकते। परिवार का जो भी काम होता है, वह सबने एकजुट होकर करना होता है। हमें स्कूल में वाँछित परिवर्तन शीघातिशीघ्र चाहिये ताकि आगामी कक्षाओं के आरम्भ होने से पूर्व सारा प्रबन्ध अच्छे से सुनिश्चित हो जाये।

आप सभी रीति-नीति पर चलने में सक्षम बनें इन्हीं शुभकामनाओं सहित।